



ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(6): 1053-1056
www.allresearchjournal.com
Received: 18-04-2016
Accepted: 02-06-2016

Dr. Sima Kumari
Designation - 10+2
Teacher, Department
Geography, School -
High School (10+2),
Paliganj, Patna, Bihar,
India

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पलामू जिले में कृषि सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन

Dr. Sima Kumari

सारांश-

झारखण्ड राज्य में पलामू जिले के किसानों द्वारा प्रतिदिन कृषि सम्बंधित समस्याओं का उल्लेख बड़े स्तर पर देखने को मिलता है। इसके साथ ही पलामू क्षेत्र की मृदा तथा कृषि योग्य भूमि में जीवाश्मों का अभाव आधुनिक किसानों की एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। इस अध्ययन में शोधार्थी ने पलामू क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले किसानों की आर्थिक समस्याओं एवं कृषि सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन है जो भू वैज्ञानिकों तथा कृषि वैज्ञानिकों के लिए कृषि या मृदा या मृदा सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण में बेहद कारगर साबित होगा।

मूल शब्द – पलामू, मृदा पोषक तत्व, बंजर भूमि, जिंक, बोरॉन

प्रस्तावना

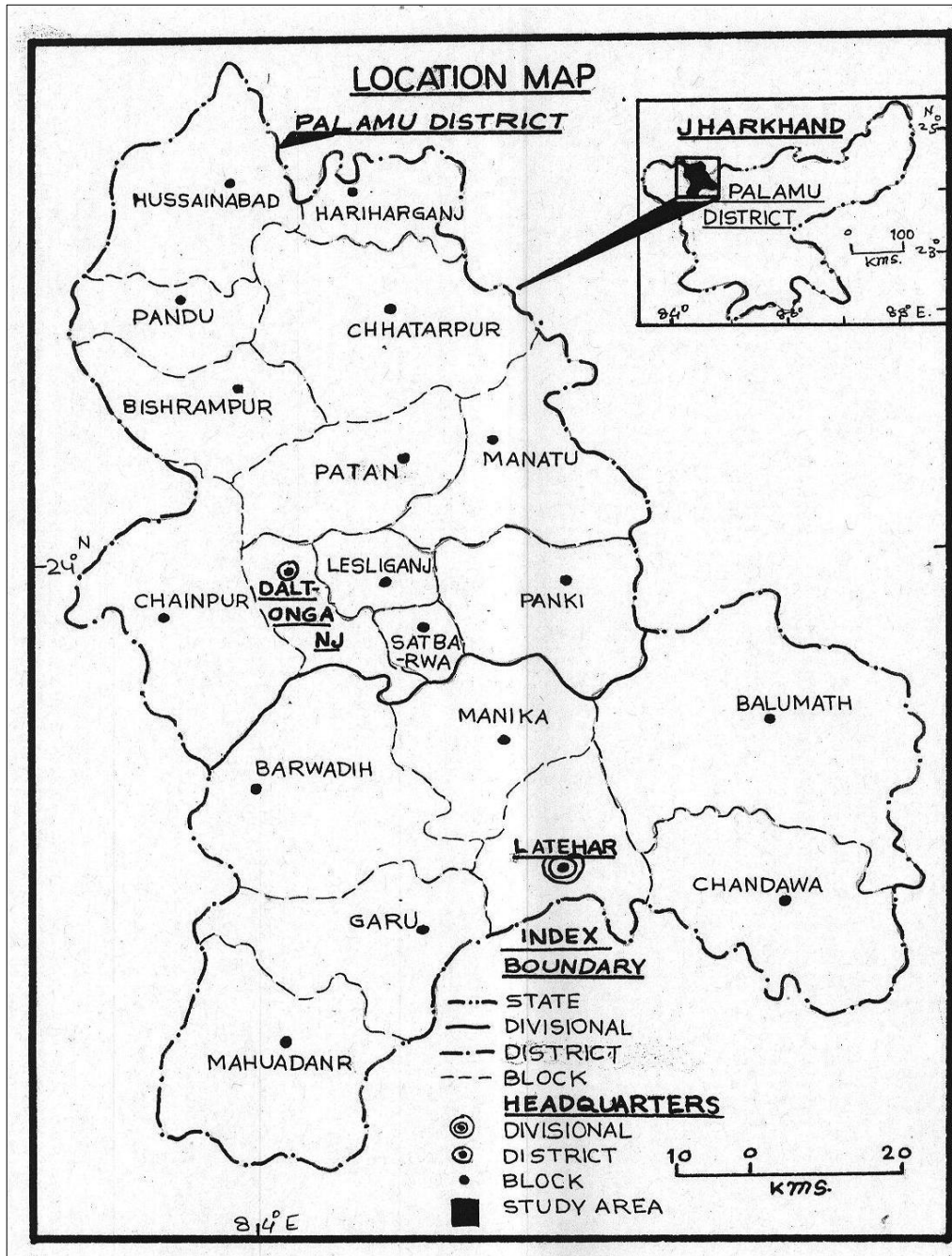
भारत में अधिकांश आबादी गाँवों में निवास करती है तथा कृषि प्रधान आबादी के रूप में कृषि पर आश्रित है। प्राचीन काल से ही मानव विकास में कृषि का योगदान अद्वितीय रहा है। आदिमानव काल से ही कृषि के स्वरूप और खेती करने के तरीकों में निरंतर परिवर्तन आते रहे हैं। आद्योगिक क्रांति के पूर्व में भी मानव आबादी का अधिकांश हिस्सा कृषि पर ही निर्भर रहा है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद कृषि का उत्पादन कई गुणा बढ़ा है परन्तु भारतीय कृषि में व्याप्त कुछ कारक इसके संतुलित विकास व वृद्धि में अवरोधक हैं। भारतीय कृषि अभी भी व्यापक रूप से सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर करती है। लगभग 60 से 70 प्रतिशत विशुद्ध बुवाई क्षेत्र निरंतर सिंचाई की अपेक्षा वर्षा के जल पर निर्भर रहता है।⁴

अध्ययन का उद्देश्य-

शोधार्थी द्वारा किये गए इस अध्ययन का उद्देश्य पलामू क्षेत्र में कृषि से जुड़ी आधुनिक समस्याओं तथा कृषक वर्ग की आर्थिक समस्याओं का आंकलन करना है ताकि कृषक वर्ग को कृषि सम्बंधित समस्याओं से उभारा जा सके। इस अध्ययन में शोधार्थी द्वारा तीन मुख्य बिन्दुओं पर प्रभाव के आंकलन हेतु शोध कार्य किया गया है जो निम्नवत हैं-

Corresponding Author:
Dr. Sima Kumari
Designation - 10+2
Teacher, Department
Geography, School -
High School (10+2),
Paliganj, Patna, Bihar,
India

- पलामू क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का आंकलन करना।
- पलामू क्षेत्र की कृषि से सम्बंधित समस्याओं का अध्ययन करना।
- पलामू क्षेत्र की कृषि भूमि का अध्ययन करना।



चित्र 1: पलामू का भौगोलिक स्वरूप

पलामू क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का आंकलन -
पलामू झारखण्ड का एक जिला है जो पूर्व दिशा में चतरा, पश्चिम दिशा में गढ़वा, दक्षिण में लातेहार तथा उत्तर में बिहार राज्य से सटा हुआ है। 23°50' से 24°8' उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा 83°55' पूर्वी देशांतर के

बीच स्थित यह जिला 8,717 वर्ग कि. मी क्षेत्र में फैला हुआ है।³
पलामू क्षेत्र का अधिकतर भूभाग उबड़ खाबड़ एवं वनों से आच्छादित है। वर्ष २०११ की जनगणना के अनुसार पलामू क्षेत्र की कुल आबादी 26,61,992 है।

पलामू क्षेत्र की भूमि का आंकलन –

तालिका संख्या 1: पलामू जिला में भूमि का वर्गीकरण : 2006 (हजार हेक्टर में)

क्रम संख्या	भूमि का वर्गीकरण	भूमि का कुल का क्षेत्रफल	प्रतिशत
1.	वन	336	45.28
2.	ऊसर और कृषि के लिए अयोग्य भूमि	44	5.93
3.	गैर कृषि कार्यों में लगाई गई भूमि	28	3.77
4.	विविध वृक्ष फसल एवं गाछी	03	0.40
5.	स्थायी चारागाह एवं अन्य गोचर के जनतमद्ध भूमि	03	0.40
6.	कृषि योग्य बंजर भूमि	15	2.02
7.	अन्य परती भूमि	78	10.51
8.	चालू परती	105	14.15
9.	पुद्ध बोया क्षेत्र	130	17.52
10.	एक से अधिक बार बोया गया क्षेत्र	16	2.15
11.	कुल बोया गया क्षेत्र	166	22.37

कृषि से सम्बन्धित समस्याएं –

झारखण्ड राज्य अन्य राज्यों से कृषि के मुकाबले काफी पिछड़ा हुआ है इसे कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने एवं उपज को दुगुना करने के लिए निम्न समस्याओं का अध्ययन करना अति आवश्यक होगा।

अनुपजाऊ भूमि की अधिकता

पलामू क्षेत्र में अधिकतर भूमि ऐसी है जहाँ खेती करना मुश्किल है। कृषि योग्य भूमि में आवश्यक पौष्टिक तत्वों का हास भूमि के उपजाऊपन को समाप्त कर रहा है अनुपजाऊ भूमि का दायरा भी किसानों की मुश्किल में मुख्य बिंदु है।

पलामू क्षेत्र में कृषि विभाग के किये गए सर्वे के परिणामों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 336 हजार हेक्टेयर भूमि पर वन है अर्थात् वनाच्छादित भूमि का भाग सर्वाधिक है जो कुल भूमि का 45.28 प्रतिशत है। 6 फीसदी कृषि के अयोग्य भूमि है जिस पर कृषि कर पाना असंभव है।

पलामू क्षेत्र का अधिकतर स्वरूप जंगली वनों से (45.28 %), ऊसर (5.93 %), पथरीली भूमि (10.58 %) तथा संसाधनों के अभाव में बेकार पड़ी बंजर भूमि (2.02%) के फलस्वरूप अनुपजाऊ भूमि के प्रतिशत में वृद्धि दर्शाता है।¹

सिंचाई की समस्या

पलामू के किसानों को अकाल एवं सूखे की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।⁵ पुरानी सिंचाई परियोजना की मरम्मत न होने के कारण वह क्षतिग्रस्त हो चुकी है।

इस क्षेत्र के किसान पूरी तरह जनजातीय अथवा निर्धन आर्थिक स्थिति वर्ग के हैं, जिनमें सिंचाई साधनों के अभाव में भारी समस्या का सामना करना पड़ रहा है।^[2]

इस क्षेत्र में वर्षा की अनिश्चितता के कारण कृषि में सिंचाई का अभाव है। उबड़ खाबड़ एवं पथरीली भूमि के कारण वर्षा जल का कृषि भूमि में ठहराव नहीं हो पाता है जिससे फसलों को पर्याप्त जल उपलब्ध नहीं हो पाता है।

अम्लीय वर्षा

कृषकों के खाद्यान्न उत्पादन में अम्लीय वर्षा प्रमुख समस्या बनी हुई है। पलामू, गढ़वा, लातेहार में अम्लीय भूमि का क्षेत्र 16 प्रतिशत है जो कि तिलहन, गेहूँ, मक्का तथा दलहन की फसलों के लिए अनुपयोगी सिद्ध हो रही है।

अम्लीय भूमि की अधिकता के कारण एलुमिनियम, फ्लोरिड^[2], मेगनीज, तथा लौह धातु आसानी से मृदा में घुलनशील हो जाते हैं जो फसलों के उत्पादन में हानिकारक प्रभाव देखने को मिलते हैं परिणामस्वरूप मृदा में पोषक तत्वों का अभाव हो जाते हैं।

पलामू क्षेत्र में मृदा में पोषक तत्वों की कमी का आंकलन निम्न तालिका -2 से किया जा सकता है।

तालिका 2: पलामू में पोषक तत्वों स्तर

तत्व	कमी	संतोषप्रद
ज़िंक	9.7	85.7
बोरोन	67.7	27.7

तालिका -2 से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि पलामू क्षेत्र की मृदा में जिंक तत्व का 9.7 फ़ीसदी का अभाव है साथ ही बोरोन नामक तत्व की भी 67.7 %की कमी देखी जा सकती है।

सुझाव -

पलामू क्षेत्र में कृषि की उन्नति हेतु सरकार को सर्वप्रथम नई सिंचाई परियोजनाएं क्रियान्वित करने की दिशा में कार्य किए जाने की आवश्यकता है।

पुरानी एवं क्षतिग्रस्त जल सिंचाई परियोजनाओं की जल्द मरम्मत करवाई जानी अति आवश्यक है जिससे मानसून की अनुपस्थिति में सिंचाई व्यवस्था सुचारू रूप से क्रियान्वित रहे।

सरकार को जनजातीय क्षेत्रों में कृषक जागरूकता अभियान हेतु किसान प्रशिक्षण केंद्रों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए अथवा पिछड़े क्षेत्रों में किसान जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।

किसानों को न्यूनतम मूल्य पर खाद बीज तथा कृषि उपयोगी मशीनरी उपलब्ध कराई जाए।

मृदा में पोषक तत्व के स्तर में वृद्धि हेतु पौष्टिक जीवाश्म युक्त खाद तथा बीज उपलब्ध करवाए जाएं।

जनजातीय क्षेत्रों अथवा भौगोलिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों में किसानों को सस्ती दर पर ऋण उपलब्ध करवाया जाए।

आधुनिक कृषि तकनीकों की उपलब्धता को सुगम बनाया जाए ताकि यह निर्धन कृषक वर्ग तक पहुंच सके।

किसानों को गहरी जोत के संबंध में जागरूक किया जाए ऐसी स्थिति में वर्षा की अनिश्चितता वाले क्षेत्रों में कृषि को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ।

निष्कर्ष -

पलामू के भौगोलिक विस्तार तथा कृषि की भौगोलिक दशाओं के गहन अध्ययन से प्राप्त प्राथमिक तथा द्वितीयक आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि आर्थिक रूप से पिछड़े इस जिले में कृषि करना बेहद मुश्किल कार्य है। झारखंड राज्य एवं भारत सरकार को इस दिशा में बेहतर कार्य करने की आवश्यकता है ताकि बेकार पड़े भूमि के बहुत बड़े हिस्से को कृषि कार्य हेतु उपयोगी बनाया जा सके। कृषि संसाधनों के

अभाव के कारण पलामू के जनजातीय किसान चिंतित हैं क्योंकि उनकी आजीविका मात्र कृषि पर आश्रित है। अतः यह शोध कार्य के निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है कि पलामू क्षेत्र कृषि समस्याओं से ग्रसित क्षेत्र है जिसका निवारण अति आवश्यक है।

सन्दर्भ सूची -

1. कृषि विभाग, पलामू जिला।
2. Kumari Neeta, Pathak Gopal. A Review of Groundwater Quality Issue in Jharkhand Due to Fluoride. International Journal of Engineering Research and Applications. 2014; 4:2248-962265.
3. <https://palamu.nic.in/hi/>
4. माधव पटेल की पुस्तक "किसान" पृष्ठ 3
5. Mallik AK, Govindaswamy TS. The drought problem in India in relation to agriculture, Annals of Arid Zone I, 1962-63, 106-113.